दीपावली परिचय

बुधवार, ११ नवम्बर – रविवार, १५ नवम्बर, २०२०

प्रकाश का उत्सव, दीपावली पूरे भारत वर्ष में आश्विन व कार्तिक महीनों में [पश्चिमी कैलेण्डर के अनुसार अक्टूबर-नवम्बर माह में] कई दिनों तक मनाया जाता है। इस त्यौहार में चार उत्सव मनाए जाते हैं : गोवत्स द्वादशी, धनतेरस, नरक चतुर्दशी, और दीपावली।

संस्कृत शब्द दीपावली का अर्थ है, "दीपों की आवली" यानी "दीपों की पंक्ति।" इस त्यौहार के दौरान छोटे-छोटे मिट्टी के दीपक जलाए जाते हैं, जो दिव्य प्रकाश के विजयोल्लास का प्रतीक हैं। दीपावली अन्तर के प्रकाश यानी समस्त सृष्टि को आलोकित करने वाले आत्मा के प्रकाश का महोत्सव है।

गोवत्स द्वादशी

बुधवार, ११ नवम्बर, २०२०*

दीपावली पर्व का प्रथम दिन गोवत्स द्वादशी है। भारत में यह परम्परा है कि इस दिन की सन्ध्या पर, गोधूलि बेला में, गायों और बछड़ों की पूजा की जाती है। भारतवर्ष में गायों को सबसे पवित्र पशुओं में से एक माना जाता है और गायों की पूजा करना सभी पशुओं व प्रकृति में निहित दिव्य शक्ति का सम्मान करने का एक तरीक़ा है। पूजा से पहले गौशालाओं को साफ़ कर, आम के पत्तों व फूलों के तोरण लगाकर उन्हें सजाया जाता है और वहाँ दिए जलाए जाते हैं। लोग गायों के माथे पर इत्र, चन्दन और कुमकुम लगाकर उनकी पूजा करते हैं और फिर उनकी आरती उतारकर उन्हें मिठाई खिलाते हैं।

* भारत में गोवत्स द्वादशी गुरुवार, १२ नवम्बर, २०२० को मनाई जाएगी।

धनतेरस

गुरुवार, १२ नवम्बर, २०२०*

धनतेरस के दिन, धन व समृद्धि के देवी-देवता, देवी महालक्ष्मी और भगवान कुबेर की पूजा की जाती है। इस दिन स्वर्ण मुद्राओं या सुनहरे रंग के फूलों, फलों और वस्त्रों के रूप में श्रीगुरु को स्वर्ण

अर्पित करने की परम्परा है। स्वर्ण अर्पित करने के प्रतीकात्मक रूप में कई सिद्धयोगी दक्षिणा अर्पित करते हैं।

* भारत में धनतेरस शुक्रवार, १३ नवम्बर, २०२० को मनाई जाएगी।

नरक चतुर्दशी

शुक्रवार, १३ नवम्बर, २०२०*

इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर पर विजय प्राप्त की थी। परम्परानुसार, नरक चतुर्दशी के दिन देवी महालक्ष्मी और पवित्र नदी गंगा से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, अभ्यंग स्नान [तेल लगाने के पश्चात् स्नान] किया जाता है। भारत में यह मान्यता है कि सूर्योदय से पूर्व, जब आकाश में तारे दिखाई दे रहे हों, उस समय यह स्नान करना गंगा में स्नान करने के समान है।

भारतीय पंचाग के अनुसार नरक चतुर्दशी की रात्रि, वर्ष की तीन सबसे मंगलमय रात्रियों में से एक है।

* भारत में नरक चतुर्दशी शनिवार, १४ नवम्बर, २०२० को मनाई जाएगी।

दीपावली

शनिवार, १४ नवम्बर, २०२०*

दीपावली पर्व, उस समय का स्मरण कराता है जब भगवान श्रीराम अपनी अर्धांगिनी सीता व अनुज लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे। दैत्यराज रावण को भगवान श्रीराम व उनकी सेना द्वारा पराजित करने के बाद, भगवान राम का चौदह वर्ष का वनवास इस दिन समाप्त हो गया था। अपने महाराज के लौटने का आनन्दोत्सव मनाने के लिए अयोध्यावासियों ने, मिट्टी के दीयों से उनका मार्ग प्रकाशित कर दिया था—पूरी अयोध्यानगरी को दीयों से सजा दिया गया था।

दीपावली समय है, सम्पूर्णता एवं नवीन शुभारम्भ दोनों का, यह सौहार्द, उदारता एवं सद्भावना से सराबोर होता है। इस दिन देवी महालक्ष्मी का पूजन किया जाता है। वे उन स्थानों में निवास करती हैं जो सुव्यवस्थित, स्वच्छ और सुन्दर होते हैं। उनके स्वागत के लिए लोग अपने घरों व कार्यालयों को साफ़ करते हैं और उन्हें सजाते हैं। वे विशेष पकवान बनाकर, पूजन करके और आध्यात्मिक अभ्यास करके देवी महालक्ष्मी का सम्मान करते हैं।

* भारत में दीपावली रविवार, १५ नवम्बर, २०२० को मनाई जाएगी।

भारतीय नूतन वर्ष

रविवार, १५ नवम्बर, २०२०*

गुजरात में और महाराष्ट्र के कुछ भागों में, दीपावली के अगले दिन नूतन वर्ष मनाया जाता है। यह दिन, नए आरम्भ की स्फूर्तिदायक शक्ति से परिपूर्ण होता है और यह वर्ष के सबसे मंगलमय साढ़े तीन दिनों में से एक है। यह अपने उद्देश्यों व संकल्पों को नया रूप देने का समय है और साथ ही मित्रता को नवीन करने व मतभेदों को दूर करने भी समय है।

इस दिन लोग नए कपड़े पहनते हैं, उपहारों व मिठाइयों का आदान-प्रदान करते हैं और अपने बड़े-बुज़ुर्गों से आशीर्वाद लेते हैं। व्यापारी नए बही-खाते बनाकर इस शुभारम्भ का सम्मान करते हैं। पुराने खाते बन्द करना देवी महालक्ष्मी के आगमन का स्वागत करना है।

परम्परागत तौर पर लोग इस दिन उन कामों को करते हैं जिन्हें वे पूरे वर्ष करना चाहते हैं। सिद्धयोग पथ पर हम अपनी साधना के प्रति वचनबद्ध रहने का संकल्प लेकर, आध्यात्मिक अभ्यासों को करके और सिद्धयोग सिखावनियों के लिए श्रीगुरु के प्रति कृतज्ञता अर्पित करके नूतन वर्ष का उत्सव मनाते हैं।

* भारत में यह नूतन वर्ष सोमवार, १६ नवम्बर, २०२० को मनाया जाएगा।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।